एम0ए0 द्वितीय सेमेस्टर

छठा प्रष्न पत्र

'सगुण भक्ति काव्य एवं रीतिकाव्य'

(सूरदास, मीराबाई, तुलसीदास, केषवदास, बिहारी, घनानंद)

1. सूरदास : व्याख्या और आलोचनात्मक अध्ययन
   (क) कृश्ण काव्य की परंपरा
   (ख) हिंदी कृश्ण काव्य की सामान्य प्रकृति एवं प्रवृत्तियां
   (ग) कृश्णकाव्य परंपरा और सूरदास
   (घ) सूरदास और उनका काव्य : जीवनी, अनुभूति और अभिव्यक्ति विधान

- निर्धारित पुस्तकें : 'भ्रमरगीत सार' – (संपा0) रामचन्द्र षुक्ल
  पद संख्या –
  10,11,13,19,20,29,44,50,57,63,66,70,82,83,87,92,104,106,114,128,133,144,146,149,163 = 25 छंद।

2. **मीराबाई : व्याख्या और आलोचनात्मक अध्ययन**
   (क) गीतिकाव्यपरंपरा और भक्तिकालीन हिंदी कविता
   (ख) कृश्ण काव्य की गीतिभावना और उसकी विषेशताएं
   (ग) मीरा और उनका काव्य : जीवनी, अनुभूति और अभिव्यक्ति विधान

- निर्धारित पुस्तकें : 'मीरा की पदावली'(खण्ड–2) – (संपा0) परषुराम चतुर्वेदी
  पद संख्या –
  1,3,,5,6,7,10,14,18,19,24,25,31,33,34,36,37,38,39,41,42,44,45,46,48,51,68,73,74 =25 पद।

3. तुलसीदास : व्याख्या और आलोचनात्मक अध्ययन
   (क) रामकथा , राम काव्य परंपरा
   (ख) राम काव्य में प्रबंध और गीति
   (ग) तुलसीदास और उनका काव्य : जीवनी, अनुभूति और अभिव्यक्ति विधान
   (घ) रामकाव्य और कृश्णकाव्य के रचना विधान का तुलनात्मक अध्ययन

- निर्धारित पुस्तकें : उत्तरकाण्ड (रामचरित मानस)

4. केषवदास : व्याख्या और आलोचनात्मक अध्ययन
   क) रीतिकाव्य की सांस्कृतिक पृश्ठभूमि
   (ख) रीति परंपरा : प्रवर्तन और विकास

- निर्धारित पुस्तकें : रामचंद्रिका(प्रकाष 9 एवं 10)

5. बिहारी : व्याख्या और आलोचनात्मक अध्ययन

- निर्धारित पुस्तकें : बिहारी सतसई – – (संपा0) जगन्नाथ दास रत्नाकर– (आरम्भिक 100 दोहे)

6. घनानंद व्याख्या और आलोचना

- निर्धारित पुस्तकें : घनानंद कवित्त – – (संपा0) विष्वनाथ प्रसाद मिश्र
  पद संख्या –
  1,2,5,7,16,17,20,29,50,57,63,66,70,82,83,87,104,106,114,128,133,144,146,149,163 = 25 पद।

सहायक पुस्तकें

भ्रमरगीत सार की भूमिका	: रामचन्द्र षुक्ल
सूरदास	: ब्रजेष्वर वर्मा
तुलसीदास	: माताप्रसाद गुप्त
मीरा की भक्ति और उनकी काव्यसाधना का अनुषीलनः	भगवान दास तिवारी
मीरा का काव्य	: विष्वनाथ त्रिपाठी
बिहारी की वाग्विभूति	: विष्वनाथ प्रसाद मिश्र
बिहारी विभूति	: राजकुमारी मिश्र
स्वच्छन्द काव्यधारा और घनानंद	: मनोहर लाल गौड़
केषव की काव्यकला	: कृश्णषंकर षुक्ल
केषव का काव्य	: विजयपाल सिंह
आचार्य केषवदास	: हीरालाल दीक्षित

एम0ए0 द्वितीय सेमेस्टर

सातवां प्रष्न पत्र

'नाटक, रंगमंच एवं अन्य गद्य विधाएं'

1- नाटक :

(क) साहित्य में नाटक

(ख) हिंदी नाटक का इतिहास और नाटक की विभिन्न षैलियां

(ग) आधुनिक नाटक और उस पर पष्चिम का प्रभाव

(घ)भारतीय नाटक की विषेशताएं : प्राचीन नाट्यषास्त्र

(ङ) आधुनिक नाट्यकला और हिंदी नाटक

(च) नाट्यकला में रस और मनोविज्ञान की स्थिति

(छ) हिंदी रंगमंच का इतिहास

(ज) रंगमंच की आधुनिक प्रगति और हिंदी नाटकों की अभिनेयता

- निर्धारित नाटक : (व्याख्या और आलोचनात्मक अध्ययन)

(क) ध्रुवस्वामिनी : जयषंकर प्रसाद

(ख) आशाढ़ का एक दिन : मोहन राकेष

(ग) अंधायुग : धर्मवीर भारती

2- एकांकी :(व्याख्या और आलोचनात्मक अध्ययन)

(क) औरंगजेब की आखिरी रात : राम कुमार वर्मा

(ख) ऊसर : भुवनेष्वर

(ग) अपना–अपना जूता : लक्ष्मीकांत वर्मा

- निर्धारित पाठ्य पुस्तक : अभिनव एकांकी संग्रह : (हिंदी परिशद प्रकाषन, हिंदी विभाग, इलाहाबाद विष्वविद्यालय)

3- अन्य गद्य विधाएं :

(क) अरे यायावर रहेगा याद : अज्ञेय (यात्रा वृतांत)

(ख) आवारा मसीहा : विश्णु प्रभाकर (जीवनी)

- (ग) क्या भूलूं क्या याद करूं : हरिवंष राय बच्चन(आत्मकथा)

सहायक पुस्तकें

बच्चन सिंह : हिंदी नाटक

दषरथ ओझा : हिंदी नाटक : उद्‌भव और विकास
गोविन्द चातक : प्रसाद के नाटक : स्वरूप और संरचना
गिरीष रस्तोगी : मोहन राकेष और उनके नाटक
रामकुमार वर्मा : एकांकी कला
सिद्धनाथ प्रसाद : प्रसाद के नाटक
हरिमोहन : साहित्यिक विधाएंः पुनर्विचार
सविता सक्सेना : आवारा मसीहा : जीवनी के नये आयाम
जगन्नाथ चौधरी : आवारा मसीहा : सृजन और मूल्यांकन
कमलेष सिंह : हिंदी आत्मकथा : स्वरूप एवं साहित्य
रामस्वरूप चतुर्वेदी : अज्ञेय और आधुनिक रचला की समस्या

एम0ए0 द्वितीय सेमेस्टर

आठवां प्रष्न पत्र

'पाष्चात्य साहित्य सिद्धान्त'

1. आलोचना तथा आलोचक , प्रकृति और उद्देष्य, सर्जनात्मक साहित्य में उसका स्थान
2. पाष्चात्य साहित्यालोचन के इतिहास की रूपरेखा
3. यूनानी काव्यषास्त्र और उसमें प्लेटो एवं अरस्तू की स्थिति और उनके सिद्धान्तः विरेचन, अनुकरण, ट्रैजिडी तथा लिरिक महाकाव्य
4. रोमीय एवं मध्ययुगीन काव्यषास्त्र

- पुनर्जागरण एवं नवषास्त्रवादी युग – षाष्वत एवं परिवर्तनीय प्रतिमानों की मांग, निर्णयात्मक आलोचना की प्रगति।
- स्वछंदतावादी युग के प्रतिमान, दर्षन तथा पृश्ठभूमि, कॉलरिज एवं वड्र्सवर्थ विवाद, जर्मनी तथा इंग्लैण्ड में इस आलोचना की स्थिति।
-
- क्रोचे की सौन्दर्यदृश्टि एवं आलोचना, अभिव्यंजनावाद।
- आधुनिक युग में आलोचना की स्थिति तथा नई समीक्षा – टी0एस0 इलियट, रैंसम तथा रिचड्र्स का योगदान।
- विषिश्ट समकालीन आलोचक तथा उनके सिद्धान्त– रोलाबार्थ, देरिदा– संरचना, पाठ और विच्छेदन।

सहायक पुस्तकें

लीलाधर गुप्त : पाष्चात्य साहित्यालोचन के सिद्धान्त (अनु0)
रेनेवेलेक : साहित्य सिद्धान्त(अनु0)
षम्भूनाथ झा : रिचड्र्स के आलोचना सिद्धान्त
रामदरष मिश्र : हिंदी समीक्षाः स्वरूप और संदर्भ
अरस्तू : पोयटिक्स(सं0 डॉ नगेन्द्र)

प्रभा खेतान : षब्दों का मसीहा– सार्त्र
मार्क्स एंगेल्स : साहित्य के बारे में(प्रगति प्रकाषन)
सुधीष पचौरी : देरिदा का विच्छेदन सिद्धान्त और साहित्य
इलियट : दि यूज ऑव पोयट्री एण्ड यूज ऑव क्रिटिसिज्म
जड़ाऊलाल मेहता : हाइडेगर
क्रोचे : एस्थेटिक्स
षिवमूर्ति पाण्डे : टी0एस0 इलियट के आलोचना सिद्धान्त
राबर्ट पेनवारेन एवं क्लींथ ब्रुक्स : अण्डरस्टैंडिंग पोयट्री
तारकनाथ बाली : पाष्चात्य काव्यषास्त्र
सावित्री सिन्हा (सं0) : पाष्चात्य काव्यषास्त्र की परम्परा
गोपीचंद नारंग : उत्तर संरचनावाद,संरचनावाद एवं प्राच्यवाद

द्वितीय सेमेस्टर

नौवां प्रष्न पत्र

'हिंदी साहित्य का इतिहास'

आधुनिक काल

'हिंदी जाति' की अवधारणा का विकास, आधुनिकता का अर्थ, मध्ययुगीनता तथा आधुनिकता का अन्तर

1. भारतीय नवजागरण और हिंदी नवजागरण
2. आधुनिक काल–गद्यकाल, आधुनिक काल की प्रेरक विचारधाराएं
3. आधुनिक काल के उदय की पृश्ठभूमि
4. आधुनिक हिंदी कविता(1850 से अद्यतन)
5. खड़ीबोली काव्य का विकास : प्रारम्भिक काल : भारतेन्दु और द्विवेदी युगीन कविता (ब्रज भाशा तथा खड़ीबोली के संदर्भ में)
6. हिंदी गद्य का उद्‌भव एवं विकास
7. गद्य निर्माण प्रक्रिया तथा भारतेन्दु : हिंदी की विविध विधाओं का विकास
8. महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग
9. हिंदी पत्रकारिता का साहित्य के विकास में योगदान
10. हिंदी नाटक और रंगमंच का स्वरूप और विकास
11. हिंदी आलोचना का आरम्भ और विकास
12. छायावाद : आन्दोलन तथा उसके प्रमुख कवि
13. प्रगतिवादी काव्य
14. प्रयोगवाद और नई कविता
15. समकालीन हिंदी कविता की विषेशताएं
16. हिंदी कथा साहित्य के विकास के विविध चरण
    (क) कहानी विधा का विकास : विभिन्न कहानी आन्दोलनों की संक्षिप्त रूपरेखा
    (ख) उपन्यास का विकास तथा सामाजिक यथार्थ से उसका संबंध
17. हिंदी के अन्य गद्य रूपों का विकास : संस्मरण,जीवनी, आत्मकथा,यात्रा, रेखाचित्र,रिपोर्ताज,गद्यकाव्य आदि।

सहायक पुस्तकें

क्रिस्टोफर किंग	: वन लैंग्वेज टू स्क्रिप्ट्स
मैक ग्रेकर	: हिस्ट्री ऑफ लिट्रेचर
सुमन राजे	: हिंदी साहित्य का आधा इतिहास
रामस्वरूप चतुर्वेदी	: हिंदी गद्य : विकास और विन्यास
रामचन्द्र तिवारी	: हिंदी का गद्य साहित्य
लक्ष्मीसागर वार्श्णेय (1757–1857 ई0)	: आधुनिक हिंदी साहित्य की भूमिका
	: आधुनिक साहित्य (1857–1900 ई0)
श्रीकृश्ण लाल इतिहास(1900–1925 ई0)	: आधुनिक हिंदी साहित्य का
रामकिषोर षर्मा	: हिंदी साहित्य का समग्र इतिहास
बच्चन सिंह	: आधुनिक साहित्य का इतिहास
	: हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास
नामवर सिंह	: आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां
नामवर सिंह	: छायावाद

- मौखिक परीक्षा : 100 अंक (मौखिक परीक्षा पूरे सत्र के पाठ्यक्रम पर आधारित होगी।)